



भारत में पर्यावरणीय पर्यटन

मनोरंजन के लिए प्रकृति में गहरी यात्रा करने के लिए इको-टूरिज्म यानि पारिस्थितिक पर्यटन बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यह प्राकृतिक परिवेश से छेड़छाड़ या नष्ट किए बिना और साथ ही उस स्थान पर मौजूद मूल संस्कृतियों का दोहन किए बिना आपका मनोरंजन करता है। पारिस्थितिक पर्यटन यात्री और सेवा प्रदाता दोनों की जिम्मेदारी है कि वो प्रकृति को किसी भी तरह का नुकसान ना पहुंचाए। भारत एक ऐसा देश है जिसमें वनस्पतियों, जीवों, विविध संस्कृतियों और समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र की एक विस्तृत श्रृंखला है। उत्तर में बर्फ से ढके हिमालय से दक्षिण में खूबसूरत सुनहरे समुद्र तटों तक, भारत के पास अपने आगंतुकों को देने के लिए बहुत कुछ है। इसके अलावा, भारत कई असाधारण और लुप्त प्राय प्रजातियों का भी घर है। जो भारत की पहचान और उसकी विविधता को दर्शाते हैं।

भारत एक ऐसा देश है जो पूरी तरह से प्राकृतिक संपदा से संपन्न है। यहां नदी पहाड़, झरने, रेगिस्तान, एवं जंगल इत्यादि सभी कुछ हैं। जो इसे विविधताओं में एकता वाला राष्ट्र बनाते हैं। भारत में प्रकृति से जुड़े कई पर्यटन स्थल हैं जो ना केवल आपको प्रकृति के करीब ले जाने में मदद करते हैं बल्कि प्रकृति की विविधता और उसके सुजन को भी परिभाषित करते हैं। पर्यावरणीय पर्यटन पूरी तरह से पर्यटन के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण है। मूलरूप से पर्यावरणीय पर्यटन जितना संभव हो कम पर्यावरणीय प्रभाव के रूप में क्षेत्र की मूल आबादी को बनाए रखने में मदद

करता है, जिससे आप वहां की यात्रा के साथ उस जगह के वन्य जीवन और उनके निवास के संरक्षण को प्रोत्साहित करते हैं। यह, वातावरण की सांस्कृतिक और प्राकृतिक इतिहास की सराहना करने के लिए प्राकृतिक क्षेत्रों के लिए एक संरक्षण यात्रा है। इस यात्रा में लोगों को मूलरूप से पर्यावरण और उसके संरक्षण की महत्ता के बारे में पता चलता है। मनोरंजन के लिए प्रकृति में गहरी यात्रा करने के लिए इको-टूरिज्म यानि पारिस्थितिक पर्यटन बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यह प्राकृतिक परिवेश से छेड़छाड़ या नष्ट किए बिना और साथ ही उस स्थान पर मौजूद मूल संस्कृतियों का

दोहन किए बिना आपका मनोरंजन करता है। पारिस्थितिक पर्यटन यात्री और सेवा प्रदाता दोनों की जिम्मेदारी है कि वो प्रकृति को किसी भी तरह का नुकसान ना पहुंचाए। भारत एक ऐसा देश है जिसमें वनस्पतियों, जीवों, विविध संस्कृतियों और समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र की एक विस्तृत श्रृंखला है। उत्तर में बर्फ से ढके हिमालय से दक्षिण में खूबसूरत सुनहरे समुद्र तटों तक, भारत के पास अपने आगंतुकों को देने के लिए बहुत कुछ है। इसके अलावा, भारत कई असाधारण और लुप्त प्राय प्रजातियों का भी घर है। जो भारत की पहचान और उसकी विविधता को दर्शाते हैं।

देश में विभिन्न वन्यजीव अभ्यारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों की घोषणा ने निश्चित रूप से वन्यजीव संसाधनों के विकास में वृद्धि को प्रोत्साहित किया है। वर्तमान में, देश में 441 वन्यजीव अभ्यारण्य और 80 राष्ट्रीय उद्यान हैं जो सामूहिक रूप से भारत में पशुओं के संरक्षण और उनकी देखभाल के लिए कार्य करते हैं। यहां तक कि देश में कई वनस्पति विज्ञान और प्राणी उद्यान पारिस्थितिकी तंत्र के सुधार में मदद करते हैं। पर्यावरण पर्यटन के लिए भारत में कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यानों में कॉर्बेट नेशनल पार्क (उत्तराखंड), बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान

(मध्य प्रदेश), कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (मध्य प्रदेश), गिर राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य (गुजरात) और रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान), गलगीबागा बीच गोवा, ट्यडा (आंध्र प्रदेश), चिल्का झील (उड़ीसा), सुंदरवन नैशनल पार्क (पश्चिम बंगाल), काजीरंगा नैशनल पार्क (असम), कंचनजंगा जैवमंडल रिजर्व (सिक्किम), ग्रेट हिमालयन नैशनल पार्क (हिमाचल प्रदेश) इत्यादि शामिल हैं। इको-टूरिज्म की अवधारणा भारत में अपेक्षाकृत नई है। हालांकि, हाल के वर्षों में यह तेजी से बढ़ रहा है और अधिक से अधिक लोग अब इस धारणा से अवगत हो रहे हैं। जागरूकता फैलाने के लिए, भारत सरकार ने देश में पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय में पारिस्थितिक पर्यटन को लेकर विभाग भी स्थापित किया है। नाजुक हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र और लोगों की संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने के लिए कई जागरूक प्रयास किए गए हैं। इसके अलावा, छुट्टियों के शिविर (होटल आवास के बजाय) यात्रियों के बीच बहुत अधिक प्रचलित हो गये हैं। केरल में हाउसबोट, विथिरी के पेड़ के घर और कर्नाटक के जंगलों में गहरे घोंसले रिसार्ट्स आवास के लिए पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, उन लोगों के लिए जो प्रकृति का सर्वोत्तम अनुभव करना चाहते हैं, ट्रेवल कंपनियों द्वारा कई 'ग्रीन टूर' भी पेश किए जाते हैं।



देश के राष्ट्रीय उद्यान पर्यटन की दृष्टि से अत्यधिक लोकप्रिय हो रहे हैं।

पर्यावरणीय पर्यटन यदि आपको पसंद है तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखने की भी आवश्यकता है। पर्यावरण पर्यटन प्रकृति से जुड़ा पर्यटन है जिसमें आप देश की संस्कृति, सभ्यता के साथ विभिन्न जीव-जंतुओं के बारे में भी जान पाते हैं। विभिन्न पेड़-पौधे फल-फूल इस पर्यटन का हिस्सा होते हैं इसीलिए आपको यह विशेष रूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है कि आप इनका किसी भी तरह से दोहन ना करें। आप इन्हें बिना नुकसान पहुंचाए प्रकृति की इस सुरम्य यात्रा का आनंद लें। आप इस्तेमाल किए गये किसी भी तरह के कूड़े को इधर उधर ना फेंके, उन्हें एक साथ इकट्ठा कर एक निश्चित कूड़ेदान में ही फेंके। आस-पास के लोगों की निजता को ध्यान में रखते हुए उनकी तस्वीर लेने से पहले उनकी अनुमति जरूर प्राप्त करें। पर्यावरण, जीव अभ्यारण्य और आस-पास की शांति को किसी भी तरह भंग ना करें। क्षेत्र की वनस्पतियों या जीवों को अपने साथ ना ले जाएँ क्योंकि वे ही उस पर्यावरण की शान हैं और उनके बिना पर्यावरण ही नहीं है। पर्यावरणीय पर्यटन एक स्वाभाविक रूप से संपन्न क्षेत्र है और इसकी सुंदरता और स्थानीय संस्कृति को बनाए रखने की विविधता को संरक्षित करने के लिए एक जागरूक और जिम्मेदार प्रयास से संबंधित है। आपकी पर्यावरणीय यात्रा के लिए हम आपको कुछ ऐसे ही स्थलों के बारे में बताने जा रहे हैं जो आपकी

यात्रा को प्रकृति से जोड़ उसके और करीब ले आएगी। भारत में यात्रा करने के लिए यहां कुछ नाम दिए गए हैं जो देश में पारिस्थितिक पर्यटन का एक बड़ा हिस्सा हैं।

तिरुवनंतपुरम से लगभग 72 किलोमीटर की दूरी पर स्थित तनमाला भारत का पहला नियोजित पारिस्थितिक पर्यटन स्थान है। सुंदर पश्चिमी घाटों और शेंदुरुनी वन्यजीव अभ्यारण्य के सुन्दर जंगलों से घिरा हुआ, तनमाला जैव-विविधता के लिए जाना जाता है। शाब्दिक अर्थ 'हनी हिल्स', तम्माला भारत में एक लोकप्रिय पारिस्थितिक पर्यटन स्थल बन गया है। एक साहसिक पार्क समेत अद्भुत मनोरंजन आकर्षण के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित कर्मचारियों और अविश्वसनीय सूचना सुविधाओं से युक्त इस जगह में यह सब कुछ है। यह तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित है - अवकाश क्षेत्र, साहसिक क्षेत्र और संस्कृति क्षेत्र, प्रत्येक एक विशेष विषय के अनुसार डिजाइन किया गया है। यहां पर कई रिसॉर्ट्स भी स्थित हैं जहां आगंतुक शांतिपूर्वक रह सकते हैं। आप नाइट ट्रिप या फैमली के साथ नाइट आउटिंग के लिए यहां रात गुजार सकते हैं। रात के वक्त यहां नजारा और भी खूबसूरत होता है।

महाराष्ट्र में स्थित अंजता और एलोरा की गुफाएं सबसे प्राचीन पर्यावरणीय पर्यटन का स्थल हैं। यह सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से

एक, के रूप में जानी जाती हैं। खासकर यदि आप एक वास्तुकला प्रेमी हैं। सांस्कृतिक सौंदर्य और धार्मिक इतिहास में आपकी रुचि है तो यह जगह बिल्कुल आप ही के लिए है। यहां की गुफाएं सुंदर और उत्तम दीवार चित्रों और कला का घर हैं जो बुद्ध और हिंदू धर्म के जीवन पर आधारित हैं। यह गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। बड़े-बड़े पहाड़ और चट्टानों को काटकर बनाई गई ये गुफाएं भारतीय कारीगरी और वास्तुकला का बेहतरीन नमूना हैं। अंजता की गुफाओं में ज्यादातर दीवारों पर की गई नक्काशी बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई हैं जबकि एलोरा की गुफाओं में मौजूद वास्तुकला और मूर्तियां तीन अलग-अलग धर्मों से जुड़ी हैं- बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिंदू धर्म का प्रतीक हैं। अंजता एक दो नहीं बल्कि पूरे 30 गुफाओं का समूह है जिसे घोड़े की नाल के आकार में पहाड़ों को काटकर बनाया गया है और इसके सामने से बहती है एक संकरी सी नदी जिसका नाम वाघोरा है। एलोरा की गुफाओं में 34 मोनैस्ट्रीज और मंदिर हैं जो पहाड़ के किनारे पर करीब 2 किलोमीटर के हिस्से में फैले हुए हैं। इन गुफाओं का निर्माण 5वीं और 10वीं शताब्दी के बीच किया गया था। एलोरा की गुफाएं पहाड़ और चट्टानों को काटकर बनाई गई वास्तुकला का सबसे बेहतरीन उदाहरण हैं। धार्मिक चित्रों, मूर्तियों और गुफाओं की प्राकृतिक सुंदरता पर्यावरण के अनुकूल



अंजता एवं एलोरा की गुफाएं भारतीय वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है।

पर्यावरणीय पर्यटन यदि आपको पसंद है तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखने की भी आवश्यकता है। पर्यावरण पर्यटन प्रकृति से जुड़ा पर्यटन है जिसमें आप देश की संस्कृति, सभ्यता के साथ विभिन्न जीव-जंतुओं के बारे में भी जान पाते हैं। विभिन्न पेड़-पौधे फल-फूल इस पर्यटन का हिस्सा होते हैं इसीलिए आपको यह विशेष रूप से ध्यान रखने की आवश्यकता है कि आप इनका किसी भी तरह से दोहन ना करें। आप इन्हें बिना नुकसान पहुंचाए प्रकृति की इस सुरम्य यात्रा का आनंद लें। आप इस्तेमाल किए गये किसी भी तरह के कूड़े को इधर उधर ना फेंके, उन्हें एक साथ इकट्ठा कर एक निश्चित कूड़ेदान में ही फेंके।

आगंतुकों को उस समय की मौजूद संस्कृतियों में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। व्यावसायीकरण से दूर, अजंता और एलोरा गुफाएं आपके इको-टूर के हिस्से के रूप में जाने के लिए एक शानदार जगह हैं।

भारतीय मुख्य भूमि से दूर स्थित, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह 572 छोटे द्वीपों का एक समूह है जो अपने निर्वासित जंगलों, स्पष्ट जल और सदाबहार पेड़ों के लिए जाने जाते हैं। चूंकि वे अन्य देशों के नजदीक स्थित हैं, इसलिए ये द्वीप विभिन्न वनस्पतियों और जीवों की एक विस्तृत श्रृंखला का घर हैं। पर्यावरण पर्यटकों के लिए द्वीप के पास बहुत कुछ है। एक शांत वातावरण, स्वच्छ हवा, सुन्दर जंगल और एक समृद्ध समुद्र के साथ, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर्यावरण पर्यटन के लिए सबसे पसंदीदा स्थानों में से एक बन गए हैं। आगंतुक घोर वर्षा वन के माध्यम से स्नॉर्कलिंग, स्कूबा डाइविंग और ट्रेकिंग और लंबी पैदल यात्रा जैसी गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला का आनंद ले सकते हैं। भारत की मुख्य भूमि से अलग यह जगह तैरते एम्राल्ड द्वीपों और चट्टानों का समूह है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह नारियल और खजूर की सीमा वाले, पारदर्शी पानी वाले, आकर्षक और खूबसूरत समुद्री तटों और उसके पानी के नीचे कोरल और अन्य समुद्री जीवन के लिए मशहूर हैं। यहां की प्रदूषण रहित हवा, पौधों और जानवरों की नायाब प्रजातियों की मौजूदगी की वजह से आपको इस जगह से प्यार हो जाता है।

नंदा देवी और फूलों की घाटी, राष्ट्रीय उद्यान हिमालय में एक

अविश्वसनीय जैव विविधता के साथ असाधारण रूप से सुंदर पार्क हैं। भारत के दूसरे सबसे ऊंचे पर्वत नंदा देवी पर स्थित, नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान अपने निर्बाध पर्वत जंगल के लिए जाना जाता है और सुंदर ग्लेशियर और अल्पाइन मीडोज के मध्य में है। राष्ट्रीय उद्यान के तौर पर नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 1982 में हुई थी। यह उत्तरी भारत में उत्तराखंड राज्य में नंदा देवी की चोटी (7816 मी.) पर स्थित है। वर्ष 1988 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया था।

फूलों की घाटी दुर्लभ प्रजातियों के घर के लिए जानी जाती है यहां फूलों का एक शानदार क्षेत्र देखने को मिलता है। इस उद्यान में 17 दुर्लभ प्रजातियों समेत फूलों की कुल 312 प्रजातियां हैं। देवदार, सन्टी, सनौबर, रोडोडेंड्रन (बुरांस) और जुनिपर यहां की मुख्य वनस्पतियां हैं। नंदा देवी राष्ट्रीय पार्क में आकर पर्यटक, हिम तेंदुआ, हिमालयन काला भालू, सिरों, भूरा भालू, रूबी थ्रोप, भरल, लंगूर, ग्रोसबिक्सम, हिमालय कस्तूरी मृग और हिमालय तहर को देख सकते हैं। इस राष्ट्रीय पार्क में लगभग 100 प्रजातियों की चिड़ियों का प्राकृतिक आवास है। यहां आमतौर पर देखी जाने वाली चिड़ियां औरेंज फ्लैक्ड बुश रॉबिन, ब्लू फ्रांटेड रेड स्टोर्ट, येलो बिल्ला इड फेनटेल फ्लाइकैचर, इंडियन ट्री पिपिट और विनासियास ब्रेस्टोड पिपिट हैं। इस पार्क में चिड़ियों के अलावा, लगभग 312 प्रजातियों के सुंदर फूल और खूबसूरत वनस्पतियां हैं।

राजस्थान के भरतपुर में स्थित, केवलादेव नेशनल पार्क मानव निर्मित आर्द्रभूमि है और भारत में सबसे प्रसिद्ध

अभ्यारण्यों में से एक है जो पक्षियों की हजारों प्रजातियों का घर है। इस राष्ट्रीय उद्यान में 379 से अधिक पुष्प प्रजातियां, 366 पक्षी प्रजातियां, मछली की 50 प्रजातियां, छिपकलियों की 5 प्रजातियां, 13 सांप प्रजातियां, 7 कछुए प्रजातियां और 7 उभयचर प्रजातियां हैं। केवलादेव नेशनल पार्क देश के सबसे अमीर पक्षी विहारों में से एक है, खासकर सर्दियों के महीनों के दौरान यहां देश-विदेशी पक्षियों का जमावड़ा लगता है। पार्क में कई किफायती आवास विकल्प उपलब्ध हैं और इसे पूरी तरह से तलाशने का सबसे अच्छा तरीका पैदल, बाइक या रिक्शा पर है। यह सभी पर्यावरण-पर्यटकों और पक्षी प्रेमियों के लिए एक जरूरी जगह है। इसे पहले भरतपुर पक्षी विहार के नाम से जाना जाता था। इस पक्षी विहार में हजारों की संख्या में दुर्लभ और विलुप्त जाति के पक्षी पाए जाते हैं, जैसे साईबेरिया से आये सारस, जो यहाँ सर्दियों के मौसम में आते हैं। 1985 में इसे यूनेस्को की विश्व विरासत भी घोषित कर दिया गया था।

कहा जाता है कि अंग्रेजी शासन के दौरान कई वायसरायों और प्रशासकों ने यहां हजारों की तादाद में बत्तखों और मुर्गाबियों का संहार किया था। इस पार्क को केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान के तौर पर भी जाना जाता है और बड़ी तादाद में पक्षी विज्ञानी सर्दियों के मौसम में इस ओर आकर्षित होते हैं। पहले इस जगह का इस्तेमाल जलपक्षी के शिकार के लिए होता था और अब यह गांवों के मवेशियों के लिए चारागाह जमीन के तौर पर इस्तेमाल होता है। मानसून के मौसम के दौरान देश के प्रत्येक भागों से पक्षियों के झुंड यहाँ आते हैं। पानी में

पाए जाने वाले कुछ पक्षी जैसे सिर पर पट्टी और ग्रे रंग के पैरों वाली बतख, कुछ अन्य पक्षी जैसे पिनटेल बतख, सामान्य छोटी बतख, रक्तिम बतख, जंगली बतख, वेगंस, शोवेलेर्स, सामान्य बतख, लाल कलगी वाली बतख, और गडाल्लस यहाँ पाए जाते हैं। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटक अन्य पक्षी जैसे शाही गिद्ध, मैदानी गिद्ध, पीला भूरा गिद्ध, धब्बदार गिद्ध, हैरियर गिद्ध और सुस्त गिद्ध देख सकते हैं। पक्षियों के अलावा पर्यटक काला हिरन, पायथन, साम्बर, धब्बदार हिरण और नीलगाय जैसे जानवर देख सकते हैं।

उत्तरी कर्नाटक में दांदेली उन लोगों के लिए छुट्टी के लिए एक उत्तम विचार स्थान है जो पर्यावरण-पर्यटन और प्रकृति से प्यार करते हैं। यह अपने साहसी जल खेलों के लिए जाना जाता है और इसे कई पर्यावरण गतिविधियों के साथ एक पारिस्थितिकी-अनुकूल पर्यटन स्थल के रूप में घोषित किया गया है जो क्षेत्र में मौजूद प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीवन को संरक्षित रखने में मदद करता है।

पर्णपाती जंगलों और एक विविध वन्यजीवन से घिरा हुआ, दांदेली पर्यटकों को एक अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता प्रदान करता है। यह छोटा आधुनिक शहर रोमांचक वन्यजीव अभ्यारण्य, प्रकृति के चलने, आरामदायक कयाक सवारी, सफेद पानी राफ्टिंग, नौकायन, पक्षी देखने, रात शिविर, ट्रेकिंग, शांतिपूर्ण पिकनिक, मगरमच्छ और बाघ की खोज और आस-पास की गुफाओं के लिए रोमांचक यात्रा सहित अपने पर्यटकों के लिए कई आकर्षण प्रदान

करता है। पश्चिमी घाट के घने पतझड़ जंगलों से घिरा दार्दिली दक्षिण भारत के साहसिक क्रीडा स्थल के रूप में जाना जाता है। राफ्टिंग के लिए दार्दिली भारत में दूसरी सबसे लोकप्रिय जगहों में शुमार है। यहां टेंट लगाकर जंगल कैम्पिंग का मजा लिया जा सकता है। इसके घने जंगलों में प्रकृति के बीच रहना कुछ

हुआ। चूंकि इन द्वीपों की संस्कृति और पारिस्थितिकता को बेहद नाजुक पारिस्थितिक तंत्र द्वारा समर्थित किया जाता है, इसलिए केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप द्वीप समूह पर्यावरण-पर्यटन के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यहां पर प्रत्येक द्वीप की सुंदरता, समृद्ध समुद्री संपत्ति, रंगीन मूंगा चट्टानों,

प्राचीन सुंदरता और सुकून की जिंदगी। शहरी भाग-दौड़ और व्यस्त दिनचर्या के कोलाहल से दूर, आपको यहां सिर्फ समुद्री तटों से टकराती लहरों की आवाज सुनाई देगी। पागलपन वाली भीड़ से बहुत दूर आपको इन द्वीपों पर शांति का अहसास होगा। इस द्वीप पर आपको स्कूबा डाइविंग, स्नोर्कलिंग, कयाकिंग,

वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियों का घर है। अरावली पहाड़ियों की संकीर्ण घाटियों और तेज चट्टानों पर स्थित, सरिस्का टाइगर रिजर्व का शानदार परिदृश्य पर्णपाती पेड़ों और उत्कृष्ट घास के मैदानों से भरा हुआ है। इस खूबसूरत वन्यजीव अभ्यारण्य का पूरी तरह से अन्वेषण करने का सबसे अच्छा तरीका आपके वाहन के माध्यम से है। हालांकि, जंगल क्षेत्रों में जाने के लिए, आपको एक अधिकृत गाइड किराए पर लेना होगा, जिसे आसानी से आपके होटल, पार्क ऑफिस या अभ्यारण्य के प्रवेश द्वार पर बुक किया जा सकता है। कोई भी होटल से या स्थानीय जीप सेवा प्रदाताओं के माध्यम से एक जीप किराए पर ले सकता है। सरिस्का को वन्य जीव अभ्यारण्य का दर्जा 1955 में मिला, और जब प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत हुई, तो 1978 में इसे टाइगर रिजर्व बना दिया गया। कुछ ही सालों बाद इसे राष्ट्रीय पार्क घोषित कर दिया गया। अरावली पर्वत श्रृंखला के बीच स्थित यह अभ्यारण्य बंगाल टाइगर, जंगली-बिल्ली, तेंदुआ, धारीदार लकड़बग्घा, सुनहरे सियार, सांभर, नीलगाय, चिंकारा जैसे जानवरों के लिए तो जाना ही जाता है, मोर, मटमैले तीतर, सुनहरे कठफोड़वा, दुर्लभ बटेर जैसे कई पक्षियों का बसेरा भी है। इसके अतिरिक्त यह अभ्यारण्य कई ऐतिहासिक इमारतों को भी खुद में समेटे हुए है, जिसमें

नंदा देवी और फूलों की घाटी, राष्ट्रीय उद्यान हिमालय में एक अविश्वसनीय जैव विविधता के साथ असाधारण रूप से सुंदर पार्क हैं। भारत के दूसरे सबसे ऊंचे पर्वत नंदा देवी पर स्थित, नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान अपने निर्बाध पर्वत जंगल के लिए जाना जाता है और सुंदर ग्लेशियर और अल्पाइन मीडोज के मध्य में है। राष्ट्रीय उद्यान के तौर पर नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना 1982 में हुई थी। यह उत्तरी भारत में उत्तराखंड राज्य में नंदा देवी की चोटी (7816 मी.) पर स्थित है। वर्ष 1988 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया था।

अलग ही अनुभव देता है। इसके अलावा कायकिंग, कोरेकल राइडिंग, ट्रेकिंग और रोप क्लाइंबिंग कर सकते हैं। आप अपने प्रियजनों के साथ चांदनी नाव की सवारी के लिए जाना न भूलें यह किसी भी पर्यावरण-अनुकूल पर्यटक को जरूरी है। पर्यटक यहाँ पर भौंकने वाले हिरन, साँभर, चित्तीदार हिरन जैसे जंगली जानवरों के साथ-साथ पीले पैर वाले कबूतरों, ग्रेट पाइड हॉर्नबिल, क्रेस्टेड सर्पेन्ट ईगल और पीफाउल जैसे पक्षियों को देख सकते हैं। यहाँ पर पक्षियों की लगभग 200 प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें ऐशी स्वालो श्राइक, ड्रॉगो, ब्राहमिनी काइट, मालाबार हॉर्नबिल और मिनीवेट शामिल हैं। पर्यटक अभ्यारण्य के जंगल में ट्रेकिंग के साथ-साथ नौकायन भी कर सकते हैं।

लक्षद्वीप द्वीप दुनिया में सबसे प्रभावशाली उष्णकटिबंधीय द्वीप प्रणालियों में से हैं। 4200 वर्ग किलोमीटर से अधिक में फैला हुआ लक्षद्वीप 36 द्वीपों का एक छोटा सा समूह है, जो समुद्री जीवन से अत्यधिक समृद्ध हैं। लक्षद्वीप, मिनीकाँय व अभिनदीप इन तीनों को मिलाकर 1 जनवरी 1973 को लक्षद्वीप का गठन

सुनहरे समुद्र तटों, स्पष्ट जल, प्राकृतिक वातावरण, यहां के प्राकृतिक सौंदर्य को बरकरार रखने के साथ-साथ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रशासन ने उचित कदम उठाए हैं। अधिक सामाजिक प्रभाव और कम पर्यावरणीय क्षति के लिए, प्रशासन एक नीति का पालन करता है जो जल आधारित पर्यटन पर अधिक केंद्रित है। इस तरह की प्रचुर मात्रा में सौंदर्य और हरियाली के साथ, लक्षद्वीप द्वीप समूह किसी भी पर्यावरण-पर्यटन के लिए एक यात्रा है। नारियल वीथिकाओं के अतिरिक्त पपीते, केले व अमरूद के पेड़ों की कतारें भी सैलानियों को अलग अहसास से भर देती हैं। यह एक ऐसी जगह है जहां भारत से बहुत ज्यादा लोग नहीं जाते। इसका इकलौता कारण यह है कि यह द्वीप भारत के सुदूर दक्षिण-पश्चिम इलाके में स्थित है।

भले ही लक्षद्वीप के द्वीप लोकप्रिय पर्यटन केंद्र के तौर पर न उभर सकें हों, यहां पर्यटकों के लिए काफी कुछ है। जो लोग प्रकृति से प्रेम करते हैं और हर तरीके से उसके करीब जाना चाहते हैं, उनके लिए यह जगह बहुत खास है। लक्षद्वीप का सबसे बड़ा आकर्षण है-

कैनोइंग, विंडसर्फिंग, याच और इसी तरह की कई अन्य रोमांचक गतिविधियाँ मिल जाएंगी।

राजस्थान के अलवर से 37 किलोमीटर दूर स्थित, सरिस्का टाइगर रिजर्व भारत में प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण्यों में से एक है। भले ही यह रणथंभौर से बड़ा है, लेकिन यह कम व्यावसायिक है और इसमें विविध वन्यजीवन की एक विस्तृत श्रृंखला है, जो इसे पारिस्थितिकीय सहिष्णुता का एक आदर्श उदाहरण बनाती है।

एक विशिष्ट पारिस्थितिक तंत्र के साथ, सरिस्का टाइगर रिजर्व अद्वितीय



फूलों की घाटी, फूलों तथा पशु-पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियों के लिए जानी जाती है।

कंकवाड़ी किला प्रसिद्ध है। यह गिद्धों और चील की उड़ान का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। टाइगर रिजर्व तेंदुआ, जंगली कुत्ता, जंगली बिल्ली, लकड़बग्घा, सियार, और चीता सहित अन्य मांसाहारी जानवरों का भी शरणस्थल है।

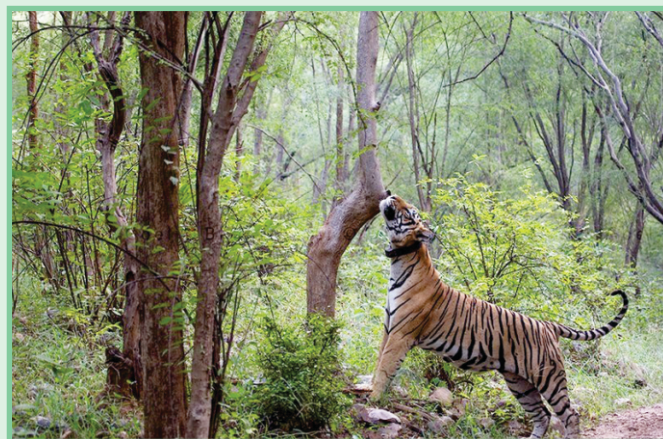
कॉर्बेट नेशनल पार्क भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य है जो टाइगर परियोजना का हिस्सा बन गया है। यह वनस्पति और बड़ी संख्या में बाघों के लिए जाना जाता है, कॉर्बेट नेशनल पार्क 110 पेड़ प्रजातियों, 580 पक्षी प्रजातियों, सरीसृपों की 25 प्रजातियों और 50 स्तनपायी प्रजातियों का घर है। इस अभ्यारण्य को जानने का सबसे अच्छा तरीका जीप सफारी के माध्यम से है सुबह में हाथियों पर बैठकर आप इस अभ्यारण्य को देख सकते हैं। जीप हाथियों की तुलना में जंगल में ज्यादा सुरक्षित हैं क्योंकि हाथियों को देख अन्य जानवर करीब नहीं आ सकते हैं। इस पार्क का मुख्य कार्यालय रामनगर में है और यहाँ से परमिट लेकर पर्यटक इस उद्यान में प्रवेश करते हैं। जब पर्यटक पूर्वी द्वार से उद्यान में प्रवेश करते हैं तो छोटे-छोटे नदी-नाले, शाल के छायादार वृक्ष और फूल-पौधों की एक अनजानी सी सुगन्ध उनका मन मोह लेती है। पर्यटक इस प्राकृतिक सुन्दरता में सम्मोहित सा महसूस करता है।

कॉर्बेट नेशनल पार्क वन्य जीव प्रेमियों के लिए एक स्वर्ग है जो प्रकृति की शांत गोद में आराम करना चाहते हैं। पहले यह पार्क (उद्यान) रामगंगा राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता था परंतु वर्ष 1957 में इसका नाम कॉर्बेट नेशनल पार्क (कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान) रखा गया। यह भारत में जंगली बाघों की सबसे अधिक आबादी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है और जिम कॉर्बेट पार्क लगभग 160 बाघों का आवास है। इस पार्क में दिखाई देने वाले जानवरों में बाघ, चीता, हाथी, हिरण, साम्बर, पाढ़ा, बार्किंग हिरन, स्लोथ भालू, जंगली सूअर, घूरल,

राजस्थान के अलवर से 37 किलोमीटर दूर स्थित, सरिस्का टाइगर रिजर्व भारत में प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण्यों में से एक है। भले ही यह रणथंभौर से बड़ा है, लेकिन यह कम व्यावसायिक है और इसमें विविध वन्यजीवन की एक विस्तृत श्रृंखला है, जो इसे पारिस्थितिकीय सहिष्णुता का एक आदर्श उदाहरण बनाती है।

लंगूर और रेसस बंदर शामिल हैं। इस पार्क में लगभग 600 प्रजातियों के रंगबिरंगे पक्षी रहते हैं जिनमें मोर, तीतर, कबूतर, उल्लू, हॉर्नबिल, चक्रवाक, मैना, मैगपाई, मिनिवेट, चिड़िया, टिट, नॉटहेच, वागटेल, सनबर्ड, बॉटिंग, ओरियल, किंगफिशर, झोंगो, कबूतर, कठफोडवा, बतख, चौती, गिद्ध, सारस, जलकाग, बाज, बुलबुल और फ्लायकेचर शामिल हैं। इसके अलावा यानी यहाँ 51 प्रकार की झाड़ियाँ, 30 प्रकार के बाँस और लगभग 110 प्रकार के विभिन्न वृक्ष देख सकते हैं। कॉर्बेट नेशनल पार्क आने वाले पर्यटकों के लिए कोसी नदी रॉफ़्टिंग का अवसर प्रदान करती है। पार्क में स्थित विभिन्न रिजॉर्ट्स रिवर रॉफ़्टिंग के लिए आवश्यक उपकरण और सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

मुंबई के नजदीक स्थित, महाराष्ट्र में एलिफंटा गुफाएँ अपने रॉक-कट मूर्तियों के लिए जानी जाती हैं जो सम्मानित हिंदू देवता-भगवान शिव को समर्पित हैं। इनमें से कुछ गुफाएँ विशाल आकार में हैं, जिनमें मंदिर शामिल हैं, जो लगभग 60,000 वर्ग फुट कवर करते हैं।



राजस्थान के अलवर के निकट सरिस्का टाइगर रिजर्व भारत में प्रमुख वन्यजीव अभ्यारण्यों में से एक है।

यूनेस्को द्वारा विरासत स्थल के रूप में घोषित, एलिफंटा गुफाओं की मूर्तियाँ एक वास्तुकला प्रेमी के लिए स्वर्ग हैं। प्रत्येक गुफा को रॉक हटाने की प्रक्रिया से सावधानीपूर्वक मूर्तिकला का रूप दिया गया है। गुफाओं की सबसे दिलचस्प विशेषता 2 कॉलम के साथ 40 वर्ग मीटर का हॉल है। एलिफंटा की गुफाएँ-दो भागों में बँटी हुई हैं इनमें से पाँच गुफाओं का समूह भगवान शिव को समर्पित है तथा दूसरे समूह में स्तूप हिल नामक दो बौद्ध गुफायें स्थित हैं।

एलिफंटा गुफाओं की यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी घोषित किया है और भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) विभाग द्वारा इसका रखरखाव किया जाता है। एलिफंटा की गुफाएँ कलात्मक कलाकृतियों की श्रृंखला है जो कि एलिफंटा आईलैंड में स्थित है। इसे सिटी आफ केव कहा जाता है। मुंबई के गेटवे आफ इंडिया से लगभग 12 किमी की दूरी पर अरब सागर में स्थित यह छोटा सा टापू है। यहां सात गुफाएँ बनी हुई हैं जिनमें से मुख्य गुफा में 26 स्तंभ हैं। भगवान शिव

के कई रूपों को उकेरा गया है। यहां भगवान शंकर की नौ बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं। शिल्प दक्षिण भारतीय मूर्तिकला से प्रेरित है। यहां सात गुफाएँ बनी हुई हैं जिनमें से मुख्य गुफा में भगवान शंकर के विभिन्न रूपों तथा क्रियाओं को दर्शाती नौ बड़ी मूर्तियाँ हैं जिसमें त्रिमूर्ति प्रतिमा सबसे आकर्षक है। इस मूर्ति की ऊंचाई 17 फुट है। इसके अलावा पंचमुखी परमेश्वर, अर्धनरेश्वर, गंगाधर, शिव का भैरव रूप आदि मूर्तियाँ भी आकर्षित करती हैं। एलिफंटा में भगवान शंकर के कई लीला रूपों की मूर्तिकारी, एलोरा और अजंता की मूर्तिकला के समकक्ष ही है। एलिफंटा की गुफाओं में चट्टानों को काट कर मूर्तियाँ बनाई गई है। इस गुफा के बाहर बहुत ही मजबूत चट्टान भी है। इसके अलावा यहाँ एक मंदिर भी है जिसके भीतर गुफा बनी हुई है।

पर्यावरणीय पर्यटन अभी भी भारत में विकसित हो रहा है और पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ता जा रहा है। हालांकि, यह सुनिश्चित करने के लिए कि भारत दुनिया के अन्य पर्यावरण पर्यटन स्थलों के साथ गति से आगे बढ़े यह हमें सुनिश्चित करना होगा कि पर्यावरण का किसी भी तरह से दोहन ना हो पर्यावरणीय जीव-जंतु, पेड़ पौधों का संरक्षण हो सके जो आज के समय में भारत सरकार की प्रथम पारिस्थितिकी प्राथमिकता है।

संपर्क करें:

डॉ. दीपक कोहली
संयुक्त सचिव, उत्तर प्रदेश शासन,
5/104, विपुल खंड, गोमती नगर,
लखनऊ-226 010
मो. 9454410037